

२४
४

अथ

१४
४

ग्रन्थनामः-

॥ वैदिक परिभाषा ॥

Vedic Paribhasha

कृतेनामः-

१

विषयः-

॥ वैदिक साहित्यम् ॥

२१२

अथ वैदिकपरिभाषा ३३

परिभाषा पुस्तक समाप्तः ॥

१४
४

१२५



॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ ॥० अथ ऋग्वेदात्मा ये राक्ष
 लके सूक्त प्रतीक ऋक्संख्यार्कषिदैवत छंदां स्पृनु केमिष्यामो यथो
 पदेशं न ह्येतत्स्थानमृते श्री तस्मार्त्त कर्म प्रसिद्धिर्न जाणां ब्राह्मणोर्षे ३१७
 यः छंदो देवत विद्या जना ध्यापनाभ्यां स श्रेयो धि गच्छेताभ्यामे
 वानेवं विदो यातया मानि छंदां सि भवंति स्थाप्युं वै छंति गते वा पात्य
 ते प्रमीयते वा पापी या भवतीति विश्वायते ॥१॥ अथ रुषयः शतविं
 न आद्ये मंडले से शुद्ध सूक्ता महा सूक्ता मध्य मेषु माध्यमाः कृद्दि
 क्थं चिदविशेषितं ब्रह्म रुषि मस्त्रि यमनुक्तगोत्रमां गिर संविद्या ३१८
 यस्य वाक्यं सरुषि र्पाते नोच्यते सा देवता यदक्षर परिमाणं तच्छं

शैथे सर्व रुषयो देवताः छंदो भिरभ्यधावंस्ति स एव देवताः
 हितं तरिक्षद्यु स्थानां अग्निर्वायुः सूर्य इत्येवं व्याहृतयः प्रोक्ता व्यक्ताः
 सत्त्वानां प्रजापति र्शंकारः सर्वदेवत्यः पारमेष्ठ्य
 वा ब्राह्मो देवो ध्यात्मिक सूक्त स्थानां अन्यास्तद्विभूतयः कर्म पृथ
 का द्वि पृथगभिधानस्तु दतयो भवंत्येकैव वामहानात्मा देवता स
 सूर्य इत्याचक्षते सहि सर्वभूतात्मा तदुक्तं ऋषिणा सूर्य आत्मा ज
 गतः स स्युषश्चेति तद्विभूतयो न्या देवता स द्रव्ये तद्विषयोक्तं मिदं चोक्तं
 मित्रं वरुणं मग्निमाहुरितियथाभिधानं त्वनु केमिष्यामः प्रये
 णेन्द्रो मरुतो राज्ञां च दानस्तुतयः ॥२॥ अथ छंदां सि गायत्र्युणि

गनुं हती पंडितस्त्रिषु प्रजगत्यतिजगतीशकयति कुर्यु
 त्यष्टी चत्यति धृतयं हति प्रकृतिं राक्षसं विहतिः संहतिस्तथापि
 छीचाभि हतिनीमसप्तमुत्कृतिरुच्यते श्वतुर्विशस्य शरादीनि
 चतस्रस्तगण्यनापिकेनेकेन निबुद्धुरिजोदाभ्यां विराट्स्वरजौ पाद
 पूजां तु सै प्रसंगे काक्षराभावात् नृहेदाद्येतु सप्तवर्गे पादवि
 शेषात्संज्ञाविशेषात्ताननु कामं त एवोदाह रिष्यामो विराट् पाविश
 दस्यानां श्ववहना अपि त्रिषु भ एवेत्यदे स सत्रदशैकादश द्वाद
 शाक्षराणां वैराजत्रैषु स जागता इति संज्ञा अनादेशेष्टाक्षरापदा
 श्वतुषदाश्ववैराजप्रथमं चंदस्त्रिपदा गायत्री पंचकाश्वत्वारः ष

गमा

२

द्वैकश्वतुर्गोवापदपंक्तिः षड्भैकादशा उष्टिगा भौत्रय
 सप्तकाः पादनिस्तत्र ध्यमः षड्भैदति निवृद्धशकश्चेद्यवप्रध्या
 यस्यास्तु षट्सप्तकाश्च ताः सावर्द्धमाना विपरीता प्रतिष्ठाः ष
 द्वौ सप्तकश्चैकयसी ॥ अयं देवायाभिष्टे अद्यामेतमद्यताम अ
 भ्यानां वावतः पुरुतम स सुचेय ईशान आपः पृणीत प्रेष्ठनव
 ॥ ४ ॥ द्वितीयमुष्टिकृत्रिपदां सोदादशा चैभ्ये सु रा उष्टिग्राध्यम
 भैककुप्रैषु जागता चतुष्टाः ककुम्भं कुसिरैकादशिनोः प
 रः षड्भैनु रिखावो मध्ये वेत्ति पिलिक पध्याद्यः पंचक सप्तो
 षका अनुगामी चतुष्टाः सप्तका इति ॥ पदं युजंति हरींददी
 राधैराधवै

सैव २

रेकुः प्रया घोषे हरी पस्पि तुं नु मंसी म ह्ये ॥ ५॥ त ती य म नु पु पं च प
 वे काः षट्क अवे को महा पद पं डिः जी ग ता व ह क अ व ह ति म ध्ये वे द ह क पि
 पी लि क म ध्या न व क यो म ध्ये जा ग तः का वि रा ए न व वे पा जः वे यो द री न
 ए रू पी द रा का स्र यो वि रा ले का द रा का वा ॥ अ न वो जि छं त व सा दि ए ॥
 मा म् क स्मे प यू षु ता वि वे रू जौ दा सा वि ए छ मि प्रे हो अ मं गि न रो हो ॥ ६ ॥
 च तु र्थं ह ह ती त ती यो दा द रा य अ वे रू स र सा ह ह ती य अ वे न्यं कु सा रि यु दि
 से ह ह ती वा स्तु धो मी वी वां स्र अ वे रू प रि षा ह ह ती ए नो म ध्ये द रा को
 वि षा र ह ह ती त्रि जा ग तो र्ध्वं ह ह ती त्र यो द रि नो म ध्ये ए कः पि पी लि
 क म ध्या न व का षे का द रा प णि नो वि ष म प दा च तु र्न व का ह ह ती वा ॥ ७ ॥

उ

य

मा चि द न्य न्म हो प स्प ति री जा न मि द्यौ र्ये पा त यं ते यु वं स्या स म ध य
 दि मे नि वो वी र स नि त सं त्वा व यं पि तो न व ॥ १॥ पं व मं पं डिः पं च प दा
 थ व तु ष्प दा वि रा ट् द रा कै र यु जौ जा ग तौ स ते ह ह ती यु जौ वे दि प
 री ता द्यौ चे स्र सार पं डि रं यो वे दा सार पं डि म ध्ये वे दि षा र पं डि
 रा वां यो वे स्रं सार पं डिः ॥ २ ॥ दा ना सो वि पि प्रो रा य न रो य नृ षु स
 स्ताः स मुं डा अ गिं ना ती या म नि दः ष णिं स ह स्रा अ स्या द्यौ ॥ ३ ॥ ष णं
 वि षु प्रै षु भ प दा द्यौ तु जा ग तौ य स्याः सा जा ग ते ज ग ती त्रै षु भे त्रि
 षु वै रा जौ जा ग तौ वा नि सा रि यी न व को वे रा ज अ वे षु भ अ वे द्यौ वा
 वै रा जौ न व क स्त्रै षु भ अ वे वि जा द स्या वै का द रि न स्र यो ए कः

सिः

वा॥

दु

वि राडु पादादशिन स्रयो एक श्रयोति प्रतीयतो एक सतो ज्योति
श्रवौ रोष्टका जागत श्रमहा ब्रह्मी मध्ये वेधवम ध्या दौ दशकां
एकाः स्रयः पञ्चु ता रा विराह्वी ॥ क स्य नूनं यूपवस्त्रा ये कालिन
यो वाचा स्वस्तिन इदः श्रुधी हवै श्रुतं मे अग्नि ने देण ता नि ज पात
नवानां समात पत्ये वे द्वाग्नि म्या दा दश ॥ १॥ सप्तमं ज गती जागत
पदाष्टिन स्रय स्रवदौ महा सतो ब्रह्म स्रष्टको सप्तकः षट्को दश
को नवक श्र पल एका वामहा षडितिः प्रदेव म छा यः पत्रा वि यति
कात दं न्ना प चत्वारि ॥ १०॥ अथ प्र गाथा ब्रह्मी सतो ब्रह्म स्रवौ वाह
तः क कृ प वे स्रवौ का कुं नौ महा ब्रह्मी महा सतो ब्रह्म स्रवौ न
महा बाह्मी नौ नौ ॥

गुप्ता

करिपादौ दावादि तः षोडश श्रवौ जागतौ चोष्टका वृष्टि
पादाः षोडश का स्रयः अष्टको चां स्रष्टि पादौ जागतौ च
एका स्रयः जागत आष्टका श्रवौ धति पादौ तु जागतौ
पादा स्रयोष्टका श्रवौ षोडश श्रवौ र एव च अष्टका श्रवौ
ति धतौ जागतः षोडश श्रवौ ॥ त्रयोष्टका जागत श्रवौ तौ
वाष्टक इत्यपि पूर्व सप्तक पादास्तु प्रसंगात् स्वयमीरितः ॥
पूर्वो महोष स्रवौ सार्क जात स्रिक दु के षडिति हो तार मव
मह इद स हि श्रवौ न सप्त ॥ १४॥ इति परि

अथ वेतमसि जयति सु सु माव

भाषासमाप्ता ॥४॥ अथ भवेत्तमेपि न वीसिसु पुमा योत
मया सचा अवमहिर्दस्सहिर्नि ॥ समाप्तायं ग्रंथः ॥
श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥ ४॥

॥

॥५॥

॥ परिभाषा पुस्तक समाप्तः ॥

॥०

५५

५

इति वीदेव परिभाषा

समा